राजस्थान सरकार

केवल कार्यालय उपयोग हेतु

प्रतिवेदन संख्याः– 101

वर्ष 2005–06 में प्रचार, प्रसार

हेतु

प्रकाशित पुस्तिकाओं/फोल्डरों

का

विशेष अध्ययन सर्वेक्षण प्रतिवेदन

मई, 2007

———————————————————————————

प्रबोधन एवं मूल्यांकन शाखा,
कृषि निदेशालय, पतं कृषि भवन
राजस्थान, जयपुर,

प्राक्कथन

प्रबोधन एवं मूल्यांकन शाखा द्वारा वर्ष 2005–06 में खरीफ रबी पुस्तिका फोल्डर वितरण पर विशेष अध्ययन सम्पादित कराया गया है । विशेष अध्ययन की श्रृंखला में यह 101 व प्रतिवेदन है । उपरोक्त अध्ययन द्वारा पुस्तिका फोल्डर के वितरण की उपयोगिता को दृष्टि गोचर किया गया, जिसके अन्तर्गत विभागीय सिफारिशों का कृषकों द्वारा प्रथमबार अध्ययन कर उत्पादन में वृद्धि की है ।

मै आशा करता हूं कि यह प्रतिवेदन कृषि विस्तार प्रबन्धकों एवं विभागीय अधिकारियों को सुझाव दिये गये बिन्दुओं पर कार्यवाही कराकर उत्पादन कीक बढोतरी में उपयोगी सिद्व होगा ।

आयुक्त कृषि,

राजस्थान, जयपुर

अनुक्रमणिका

क.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	वर्ष 2005–06 के दौरान प्रचार, प्रसार हेतु जिला स्तर पर प्रकाशित पुस्तिका/फोल्डर के विशेष अध्ययन सर्वेक्षण के मुख्य निष्कर्ष	प – पअ
2	वर्ष 2005–06 के दोरान प्रचार, प्रसार हेतु जिला स्तर पर पुस्तिकाओं/फोल्डरों के विशेष अध्ययन सर्वेक्षण	1
3	सर्वेक्षण के उद्देश्य व नमूनों	1–6
4	खरीफ 2005 पुस्तिक प्रकाशन सर्वेक्षण परिणाम	7–12
5.	रबी 2005–06 पुस्तिक प्रकाशन सर्वेक्षण परिणाम	13–18
6.	उत्पादन 150 प्रतिशत सरसों फोल्डर सर्वेक्षण परिणाम	19–22
7	टारगेट 20 + सरसों फोल्डर प्रकाशन परिणाम	23–26
8.	आप्रेशन 150 प्रतिशत जौ फोल्डर सर्वेक्षण परिणाम	27–30
9.	परिशिष्ठि 1– जिलेवार सर्वेक्षण लक्ष्य एवं प्राप्ति	31
10	परिशिष्ठ 2– जिलेवार व माहवार पुस्तिका वितरण खरीफ 2005	32
11	परिशिष्ठ 3– जिलेवार वितरण प्रकाशित सामग्री के सम्बन्ध में राय खरीफ 2005–06	33
12	परिशिष्ठ 4– जिलेवार प्रकाशित प्रकाशन की उपयोगिता	34
13	परिशिष्ठ 5– जिलेवार एवं माहवार पुस्तिक प्रकाशन सर्वेक्षण परिणाम रबी 2005–06	35
14	परिशिष्ठ 6– जिलेवार वितरण प्रकाशित सामग्री के सम्बन्ध में राय रबी 2005–06	36
15	परिशिष्ठ 7– जिलेवार प्रकाशित प्रकाशन की उपयोगिता रबी 2005–06	37

वर्ष 2005–06 के दौरान प्रचार प्रसार हेतु जिला स्तर पर प्रकाशित पुस्तिकाओं / फोल्डरों के विशेष अध्ययन सर्वेक्षण प्रतिवेदन

1 प्रस्तावना :

कृषकों को कृषि की उन्नत, नवीनतम तकनीक एंव सामयिक जानकारी उपलब्ध कराने में कृषि साहित्य की अहम भूमिका को ध्यान में रखते हुये पूर्व में कृषि विभाग द्वारा कृषि जलवायु खण्डवार खरीफ एंव रबी की पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया जाता रहा है । इसमें संबंधित कृषि जलवायु खण्ड में बोई जाने वाली प्रमुख फसलों का समावेश किया जाता था । पुस्तिकाओं का प्रकाशन सीमित संख्या में होता था । ये पुस्तिकायें कृषि विभाग में तकनीकी कार्मिक,अनुसंधान वैज्ञानिकों एंव उन्नत / प्रगतीशील कृषकों को ही उपलब्ध करायी जाती रही है ।

साक्षरता अभियानों के सुखद परिणामस्वरूप साक्षरता की अभिवृद्धि होने तथा कृषकों को स्थानीय फसलों की उन्नत तकनीक, नवीनतम एंव सामयिक जानकारी कृषि साहित्य के माध्यम से उपलब्ध करवाने हेतु वर्ष 2005–06 में विशेष अभियान लिया गया । इसे विशेष महत्व प्रदान करते हुये जिला स्तर से कृषि साहित्य का प्रकाशन किया गया । जिला स्तर से प्रकाशित मुख्य मुख्य प्रकाशन निम्न प्रकार से थे :–

- खरीफ 2005 जिला पुस्तिका
- रबी 2005–06 जिला पुस्तिका
- उत्पादकता 150 प्रतिशत सरसों ''फोल्डर ''
- टारगेट 20 + सरसों ''फोल्डर''
- आपरेशन 150 प्रतिशत जौ ''फोल्डर''

उपरोक्त प्रकाशनों का निःशुल्क वितरण कराया गया । खरीफ एंव रबी पुस्तिकाओं का वितरण कृषि विभाग के समस्त कार्मिकों, आयोजित प्रशिक्षणों के प्रतिभागियों, कृषकों, जन प्रतिनिधियों, जिले के आदान विक्रेताओं तथा शिक्षक को किये जाने के निर्देश थे ।

2 विशेष अध्ययन सर्वेक्षण के उद्धेश्यः–सर्वेक्षण के निम्न उद्देश्य थे ।

- प्रकाशन का वितरण
- वितरण की सामयिकता
- प्रकाशन सामग्री की विषय वस्तु तथा स्थानीय भाषा संबंधी गुणवत्ता
- प्रकाशन की उपयोगिता तथा कृषकों को लाभ

3 सर्वेक्षण की कार्य योजना एंव नमूना चयन :–

सर्वेक्षण अध्ययन हेतु जिलें के आधार मानकर रेण्डम टेबिल की सहायता से राज्य के 26 जिलों (चूरू, जैसलमेर, बाडमेर, हनुमानगढ, बीकानेर एवं जोधपुर को छोडकर) में प्रत्येक जिले में 10 कृषि पर्यवेक्षक मुख्यालयों का चयन किया गया । प्रत्येक कृषि पर्यवेक्षक मुख्यालय पर 10 व्यक्तियों का सर्वेक्षण किया जाना था इसमें से 2 शिक्षक (1 विद्यालय प्रभारी व 1 अन्य शिक्षक) 3 जन प्रतिनिधि सरपंच/वार्ड पंचों में से, तथा 5 अन्य कृषक लेने थे।

3.1 सर्वेक्षण हेतु सर्वेक्षणकर्ताओं को मुख्य मुख्य दिशा–निर्देश :–

सर्वेक्षण को उद्धेश्यपूर्ण बनाने हेतु सर्वेक्षणकर्ताओं को निम्न मुख्य मुख्य निर्देश प्रदान किये गये :–

1– प्रत्येक जिले हेतु 10 कृषि पर्यवेक्षक मुख्यालय राज्य स्तर से दिये जा रहे हैं।
2– यह अध्ययन जिले में कार्यरत कृषि अन्वेषकों द्धारा किया जावे ।
3– सहायक निदेशक कृषि विस्तार, जिला परिषद कार्यालय, जिले के सर्वेक्षण हेतु चयनित 10 ग्रामों में से अन्य उप जिला के अन्तर्गत आने वाले ग्रामों को संबंधित उपजिला को दिशा–निर्देश एंव परिपत्र उपलब्ध करवायेंगें तथा संबंधित उपजिला में पदस्थापित कृषि अन्वेषक द्धारा यह सर्वेक्षण कार्य किया जावेगा ।

3.2 सैम्पल का आकार :–

सैम्पल आकार के अनुसार प्रत्येक जिले में 20 शिक्षक, 30 जन प्रतिनिधि तथा 50 कृषकों को सर्वेक्षण हेतु चयन किया जाना था । इस प्रकार राज्य स्तर पर 520 शिक्षक, 780 जन प्रतिनिधि तथा 1300 कृषकों का कुल योग 2600 का सैम्पल साईज था । खण्डवार विवरण निम्न प्रकार है :–

क्र0सं0	खण्ड का नाम	लक्ष्य	प्राप्ति
1	जयपुर	500	435
2	भरतपुर	500	390
3	कोटा	500	417
4	भीलवाडा	300	270
5	उदयपुर	300	240
6	जोधपुर	400	400
7	गंगानगर	100	90
	राज्य स्तर	2600	2242

जिलेवार सर्वेक्षित नमूनों की चयनित लक्ष्य एवं प्राप्ति का विवरण परिशिष्ठ संख्या 1 में दिया है ।

सर्वेक्षण कार्य उप खण्डों में पदस्थापित कृषि अन्वेषकों द्धारा किया गया । जहां यह पद रिक्त थे अथवा सृजित नहीं थे वहां यह सर्वेक्षण कार्य संपन्न नहीं हो सका । इस प्रकार कुल 2600 नमूनों में से 2242 का सर्वेक्षण कार्य संपन्न हुआ जो लक्ष्य का 86.23 प्रतिशत रहा।

4 सर्वेक्षण परिणामों का सामान्य विश्लेषण

4.1 जाति के आधार पर वर्गीकरण :

सर्वेक्षण अनुसार जाति के आधार पर कृषकों का वर्गीकरण निम्न प्रकार रहाः–

संख्या

क्र0सं0	खण्ड	सैम्पल साईज	सामान्य	पिछडी जाति	अनु0जाति	अनु0जनजाति
1	जयपुर	435	106	228	44	57
2	भरतपुर	390	115	170	56	49
3	कोटा	417	151	167	55	44
4	भीलवाडा	270	84	123	41	22
5	उदयपुर	240	31	40	101	68
6	जोधपुर	400	141	188	57	14
7	गंगानगर	90	25	60	5	0
	योग	2242	653	976	359	254

उपरोक्त तालिका के अनुसार राज्य में चयनित 2242 कृषकों का सर्वेक्षण किया गया है । सर्वेक्षित कृषकों में से 29 प्रतिशत सामान्य, 44 प्रतिशत पिछडी जाति, 16 प्रतिशत अनुसूचित जाति व 11 प्रतिशत अनुसूचित जन जाति के थे ।

4.2 कृषकों के पास खेती योग्य भूमि :–

सर्वेक्षित कृषकों के पास औसत कृषि भूमि का खण्डवार विवरण निम्न अनुसार पाया गया :–

हैक्टेयर में

क्र0सं0	खण्ड	सैम्पल साईज	सिंचित भूमि	असिंचित भूमि	कुल भूमि	प्रति कृषक औसत भूमि
1	जयपुर	435	360	198	558	1.28
2	भरतपुर	390	307	93	400	1.02
3	कोटा	417	333	140	473	1.13
4	भीलवाडा	270	269	236	505	1.87
5	उदयपुर	240	186	54	240	1.00
6	जोधपुर	400	292	290	582	1.45
7	गंगानगर	90	90	11	101	1.12
	योग	2242	1837	1022	2859	1.27

सर्वेक्षित कृषकों के पास औसत रूप से 1.27 हैक्टेयर खेती योग्य भूमि थी । उदयपुर खण्ड में सबसे कम 1.0 हैक्टेयर तथा भीलवाडा खण्ड मे सबसे अधिक 1.87 हैक्टेयर औसत भूमि प्रति कृषक खेती योग्य थी ।

4.3 शैक्षणिक स्तर :–

सर्वेक्षित कृषकों के शैक्षणिक स्तर का भी अध्ययन किया गया । सर्वेक्षण परिणामों के अनुसार खण्डवार विवरण निम्नानुसार रहा :–

क्र0सं.	खण्ड	सैम्पल साईज	निरक्षर	साक्षर	प्राथमिक	उच्च प्राथमिक	माध्यमिक	स्नातक
1	जयपुर	435	28	45	68	59	133	102
2	भरतपुर	390	23	44	59	66	104	94
3	कोटा	417	6	28	74	95	117	97
4	भीलवाडा	270	9	42	63	42	65	49
5	उदयपुर	240	8	39	66	44	39	44
6	जोधपुर	400	60	41	74	59	78	88
7	गंगानगर	90	5	5	16	17	28	19
	योग	2242	139	244	420	382	564	493

सर्वेक्षित कृषकों में से 6 प्रतिशत निरक्षर, 11 प्रतिशत साक्षर, 19 प्रतिशत प्राथमिक, 17 प्रतिशत उच्च प्राथमिक 25 प्रतिशत माध्यमिक एंव 22 प्रतिशत स्नातक पाये गये ।

4.4 जिला स्तर पर कृषकों के लिये खरीफ व रबी में पुस्तक के प्रकाशन हेतु दिशा–निर्देश निम्न प्रकार थे :–

1– जिले के लिये उपयुक्त प्रमुख फसलों की पैकेज आफ प्रेक्टिस की 30 से 50 हजार पुस्तिकाऐं किसानों के लिये मुद्रित करवाई जावेंगी । खरीफ–रबी सीजन के लिये अलग–अलग पुस्तिकाऐं मुद्रित की जावेंगी ।

2– पुस्तिका मे तकनीकी सिफारिशों के साथ–साथ प्रभावी बिन्दुओं तथा सामाजिक सरोकारों को भी सम्मिलित किया जावे ।

3– पुस्तिका का आकार आवश्यकतानुसार रखा जा सकता है । पुस्तिका का बहुरंगीय मुद्रण गुणवत्ता वाले आर्ट पेपर पर करवाया जा सकता है ।

4– पुस्तिका का कवर पृष्ट आर्ट कार्ड–शीट पर मुद्रित किया जा सकता है ।

5– माननीय मुख्यमंत्री, माननीय कृषिमंत्री व माननीय कृषि राज्य मंत्री के संदेश पुस्तिका के प्रारम्भ में प्रकाशित किये जावें जिसके प्रारूप कृषि निदेशालय द्वारा भेजे जायेंगें ।

6– पुस्तिका में लगभग 15–20 पृष्ठ होंगें । विवरण रोचक एंव सरल भाषा में दिया जावे तथा अक्षरों का आकार सामान्य से बडा रखा जावे ताकि प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कृषक भी रूचि लेकर आसानी से इसे पढ सके । पुस्तिका में यथा स्थान फोटोग्राफस/ रेखाचित्रों का समावेश जरूर करावें ।

7– पुस्तिका के कवर के अंतिम पृष्ठ पर नवांकुर, खेती री बातां आदि का विज्ञापन प्रकाशित करवाया जायेगा ।

8– आलेख का अनुमोदन उप निदेशक कृषि विस्तार, उस पर विभिन्न समूहों में व उच्च अधिकारियों से विचार विमर्श उपरान्त कर सकते हैं ।

9– पुस्तिका के मुद्रण के लिये उप निदेशक कृषि विस्तार/सहायक निदेशक कृषि द्वारा खुली निविदा प्रक्रिया अपनाई जावेगी व निविदाओं का अनुमोदन निम्न समिति द्वारा किया जावेगा :–

अ–क्षेत्रीय संयुक्त निदेशक कृषि विस्तार
ब–उप निदेशक कृषि विस्तार/सहायक निदेशक कृषि
स–लेखाधिकारी या सहायक लेखाधिकारी या उनके प्रतिनिधि

निदेशक कृषि एंव विशिष्ठ शासन सचिव के प्रतिनिधि इस पुस्तक के आलेख व डिजाईन में समुचित संशोधन की सलाह देने के लिये अधिकृत होंगें ।

10– इस कार्य हेतु प्रत्येक जिलें को एक सीजन खरीफ के लिये 3.50 लाख रूपये का आवंटन किया जाता है । विशिष्ठ परिास्तिथियों में यदि अतिरिक्त राशि की

आवश्यकता पडती है तो इसकी स्वीकृति संबंधित कार्यालय द्धारा अलग से निदेशालय से लेनी होगी । रबी सीजन के लिये राशि रूपये 3.50 लाख अलग से उपलब्ध कराई जावेगी ।

11– इन पुस्तकों का निःशुल्क वितरण कृषि विभाग के समस्त कार्मिकों, आयोजित प्रशिक्षण के प्रतिभागियों, कृषकों, जन प्रतिनिधियों, बेस लाईन सर्वे के अन्तर्गत चयनित किसानों, जिले के कृषि आदान विक्रेताओं, विद्यालय आदि को किया जावेगा । यह ध्यान रखा जावे कि वितरण खरीफ में 30 जून 2005 तथा रबी में 05 अक्टूबर 2005 तक कृषकों में आवश्यक रूप से हो जाये ।

12– प्रत्येक जिले में प्रकाशित पुस्तक की 100 प्रतियां संयुक्त निदेशक कृषि सूचना, कृषि निदेशालय, जयपुर को भिजवाई जावे ।

अध्याय–3

4.4.1 खरीफ 2005 जिला पुस्तिका के सर्वेक्षण परिणाम :–

- खरीफ 2005 जिला पुस्तिका का प्रकाशन

दिशा निर्देशानुसार जिले के लिये उपर्युक्त प्रमुख फसलों की पैकेज आफ प्रेक्टिस की 30000 से 50000 पुस्तिकायें प्रत्येक जिले द्वारा मुद्रित करवाई जानी थी, जिस कम में 30000 से लेकर अधिकतम 70000 पुस्तक खरीफ 2005 में मुद्रित करवाई गई । 50000 से अधिक पुस्तिका मुद्रित करवाने वाले जिले निम्न प्रकार हैं :–

	नाम जिला	मुद्रित पुस्तक संख्या
1–	अजमेर	70000
2–	अलवर	54500
3–	चित्तोडगढ	67050
4–	उदयपुर	57190
5–	पाली	63000
6–	बाडमेर	69400
7–	नागौर	70000

राज्य में कुल 16,05,336 खरीफ 2005 जिला पुस्तिकाओं का प्रकाशन हुआ ।

- प्रकाशन की प्राप्ति : प्रकाशन को समस्त जन प्रतिनिधि एंव विद्यालयों को आवश्यक रूप से वितरण किया जाना था । प्रकाशन की प्राप्ती का विवरण निम्न सारणी में दिया गया है :–

क्र0सं0	विवरण	सैम्पल साईज	प्रकाशन प्राप्त	
			संख्या	प्रतिशत
01	शिक्षक	443	375	85
02	जन प्रतिनिधि	649	609	94
03	अन्य कृषक	1150	1017	88
	योग	2242	2001	89

उपरोक्त सर्वेक्षण परिणामों के आधार पर प्रकाशन की प्राप्ती 85 प्रतिशत शिक्षकों को, 94 प्रतिशत जन प्रतिनिधियों को एंव 88 प्रतिशत अन्य कृषकों को रही। इस प्रकार कुल 89 प्रतिशत को प्रकाशन प्राप्त हुआ था, खण्डवार पुस्तिका की प्राप्ती एंव उसको पढने वालों का विवरण निम्न तालिका में दिया जा रहा है :–

क्र0सं0	खण्ड का नाम	सेम्पल साईज	प्रकाशन प्राप्त		प्रकाशन पढा		प्रकाशन नहीं पढने वालों का प्रतिशत
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
01	जयपुर	435	402	92	328	82	18
02	भरतपुर	390	365	94	279	76	24
03	कोटा	417	381	91	300	79	21
04	भीलवाडा	270	260	96	228	88	12
05	उदयपुर	240	192	80	168	87	13
06	जोधपुर	400	322	81	272	84	16
07	श्री गंगानगर	90	79	88	64	81	19
	योग	2242	2001	89	1639	82	18

उपरोक्त तालिकानुसार राज्य में सबसे कम 80 प्रतिशत उदयपुर खण्ड में तथा सबसे अधिक 94 प्रतिशत भरतपुर खण्ड में प्राप्त हुआ था । व्यक्तियों को प्रकाशन प्राप्त हुआ था । सबसे कम 80 प्रतिशत उदयपुर खण्ड में तथा सबसे अधिक 94 प्रतिशत भरतपुर खण्ड में प्राप्त हुआ था ।

राज्य में प्रकाशन प्राप्त करने वाले 82 प्रतिशत ने प्रकाशन पढा । सबसे अधिक 88 प्रतिशत भीलवाडा तथा सबसे कम 76 प्रतिशत भरतपुर खण्ड के कृषकों ने प्रकाशन पढा । प्रकाशन प्राप्त होने के उपरान्त भी 18 प्रतिशत द्वारा उसकों नहीं पढा गया। सर्वाधित 24 प्रतिशत भरतपुर खण्ड का रहा जबकि न्यूनतम
12 प्रतिशत भीलवाडा खण्ड का रहा है ।

- प्रकाशन नहीं पढने का कारण :–

सर्वेक्षण के आधार पर प्रकाशन नहीं पढने का कारण खण्डवार निम्न तालिका में दिया गया है :–

क्र0सं0	खण्ड का नाम	प्रकाशन नहीं पढने वालों की संख्या	प्रकाशन नहीं पढने का कारण प्रतिशत में			
			निरक्षर	समय नहीं	आवश्यकता नहीं	अन्य
01	जयपुर	74	24	22	32	21
02	भरतपुर	86	31	22	5	43
03	कोटा	81	12	42	12	34
04	भीलवाडा	32	50	31	2	17
05	उदयपुर	24	24	22	8	46
06	जोधपुर	50	38	36	16	11
07	गंगानगर	15	12	38	19	31
योग		362	27	30	14	29

राज्य में 16 प्रतिशत ने प्रकाशन नहीं पढा था, नही पढने वाले व्यक्तियों में 27 प्रतिशत निरक्षर थे, 30 प्रतिशत ने समय का अभाव बताया, 14 प्रतिशत ने आवश्यकता नहीं समझी, तथा 29 प्रतिशत कृषकों ने अन्य कारण बताते हुए प्रकाशन नहीं पढा ।

अतः भविष्य में प्रकाशित पुस्तक साक्षर व्यक्ति एवं जिसकों आवश्यकता हो उसको ही प्राथमिकिता से वितरित किए जाने पर ज्यादा उपयोगी होगी।

- समय पर प्रकाशनः–
  दिशा–निर्देशानुसार खरीफ 2005 पुस्तिका का प्रकाशन व वितरण 30 जून 2005 तक किया जाना था जिसकी तुलना में जिलेवार पुस्तिका प्रकाशन व वितरण के सर्वेक्षण परिणाम खण्डवार निम्न प्रकार है ।

क.	खण्ड	प्रकाशन प्राप्त करने वालों की सं0	प्रकाशन वितरण माह											
			जून		जुलाई		अगस्त		सितंबर		अक्टूबर		नवम्बर	
			संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
1	जयपुर	402	–	–	100	24.87	176	43.79	126	31.34	–	–	–	–
2	भरतपुर	365	–	–	33	9.04	226	61-90	53	14.52	53	14.52	–	–
3	कोटा	381	–	–	11	2.88	179	46.98	191	50.13	–	–	–	–
4	भीलवाडा	260	–	–	31	11.92	172	66.15	51	19.61	6	2-30	–	–
5	उदयपुर	192	18	9.37	96	50	50	26.04	22	11.45	–	–	–	–
6	जोधपुर	322	–	–	24	7.45	190	59.0	108	33.54	–	–	–	–
7	गंगानगर	79	–	–	–	–	25	31.64	30	37.97	24	30.37	–	–
	राज्य स्तर	2001	18	0.9	295	15	1018	51	581	29	85	4	4	0.2

दिशा निर्देशानुसार 30 जून 2005 तक प्रकाशन व वितरण होना था, जिसके विरूद्व मात्र डूगंरपुर में ही 18 प्रतिशत पुस्तिकाओं का वितरण हुआ है। राज्य स्तर पर जून तक 0.9 प्रतिशत, जुलाई में 15, अगस्त में 51, सिंतबर में 29 एवं अक्टूबर में 4 प्रतिशत वितरण हुआ है। अतः समय पर प्रकाशन एवं वितरण सुनिश्चित किया जाता तो खरीफ 2005 के फसल मौसम में कृषकों के लिए अधिक उपयोगी होता। खण्ड एवं जिलाधिकारी भविष्य में खरीफ पुस्तिका का वितरण माह जून तक सुनिश्चित करे। जिलेवार सूचना परिशिष्ठ 2 पर उपलब्ध है ।

- उपयोगिता (समझने योग्य) :– खरीफ 2005 की पुस्तिका को पढने वालों की राय अनुसार उसमें वर्णित सामग्री कृषक अनुसार समझने योग्य थी अथवा नहीं पर सर्वेक्षण के दोरान उनकी राय ली गयी खण्डवार विवरण निम्न प्रकार है ।:–

क.	नाम खण्ड	प्रकाशन पढने वालों	प्रकाशित सामग्री समझने योग्य

		की सं0						
			पूर्णरूपेण		आंशिक		बिल्कुल नहीं	
			सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
	जयपुर	328	252	77	74	22	2	1
	भरतपुर	279	279	78	50	18	10	4
	कोटा	300	198	66	91	30	11	4
	भीलवाडा	228	126	55	92	40	10	5
	उदयपुर	168	118	70	50	30	0	0
	जोधपुर	272	222	82	50	18	0	0
	श्रीगंगानगर	64	46	72	18	28	0	0
	राज्य स्तर	1639	1181	72	425	26	33	2

सर्वेक्षण परिणामों के आधार पर प्रकााशन को पढने वाले कृषकों में से 72 प्रतिशत ने प्रकाशन को पूण्र समझने योग्य बताया तथा 26 प्रतिशत कृषको ने आंशिक समझने योग्य तथा 2 प्रतिशत कृषकों ने बिल्कुल समझने योग्य नहीं बताया। जिलेवार विवरण परिशिष्ठ संख्या 3 में दिया गया।

अतः प्रकाशन में वर्णित सामग्री को स्पष्ट, रोचक एवं सरल भाशा में बनाए जाने की अत्यंत आवश्यकता है। विशेष रूप से निम्न जिलों के प्रकाशन 20प्रतिशत से ज्यादा कृषकों की राय में आंशिक रूप से समझने योग्य तथा बिल्कुल समझने योग्य नही थे। जयपुर (21) दौसा (50,) अलवर (37), सवाई माधोपुर(67), कोटा (46,) झालावाड (41), टौंक (50,) भीलवाडा (24,) चित्तौड (24) राजसंमद (73), उदयपुर (64,) डूगंरपुर (37) पाली (42) श्रींगंगानगर (28)

अतः इन जिलों द्वारा भविष्य में कृषि साहित्य /पुस्तिका के प्रकाशन हेतु स्पष्ट, रोचक एवं सरल भाषा का उपयोग किए जाने पर प्रकाशित सामग्री कृषकों के लिऐ ज्यादा उपयोगी एवं लाभदायक रहेगी।

- उपयोगिता—सर्वेक्षण के अनुसार प्रकाशन पढने वाले भी संख्या एवं पढने से नवीन जानकारी प्राप्त व प्राप्त जानकारी को प्रथम बार उपयोग व लाभान्वित कृषकों का खण्डवार विवरण निम्न प्रकार है :—

क. सं.	नाम खण्ड	प्रकाशन पढने	नवीन जानकारी	प्रकाश सामग्री अनुसार सिफारिश	प्रथमतया सिफारिश के अपनाने से लाभान्वित

		वालों की सं0	प्राप्त करने वाले		का प्रथम बार उपयोग करने वाले कृषक		कृषक		
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	अधिक	कम	बिल्कुल नहीं
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
	जयपुर	328	287	87	96	29	65	27	4
	भरतपुर	279	258	92	73	26	40	23	10
	कोटा	300	249	80	93	31	56	36	1
	भीलवाडा	228	200	87	130	57	77	45	8
	उदयपुर	168	121	72	76	51	61	12	3
	जोधपुर	272	250	92	164	61	109	16	4
	श्रीगंगानगर	64	56	87	46	72	24	22	0
	राज्य स्तर	1639	1421	87	677	41	462	181	31

सर्वेक्षण परिणामों के अनुसार खरीफ, 2005 की जिला पुस्तिका पढने वालों में से 87 प्रतिशत को नवीन जानकारी प्राप्त हुई तथा 41 प्रतिशत ने प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथमतया उपयोग किया गया। प्रथमतया सिफारिश का उपयोग करने वालों के अनुसार 69 प्रतिशत अधिक एवं 26 प्रतिशत आशा से कम लाभान्वित हुए जबकि 5 प्रतिशत कृषकों के अनुसार वह बिल्कुल लाभान्वित नहीं हुए। जिलेवार सूचना परिशिष्ठ 4 पर उपलब्ध है ।

प्रकाशन से कृषकों को नवीन जानकारी प्राप्ति में राज्य स्तर के औसत 87 प्रतिशत से कम रहने वाले जिले निम्न प्रकार से है–

अजमेर (75), जयपुर (33), दौसा (81), अलवर (84), स0 माधोपुर (83), बारां (80)
झालावाड (74), टौंक (72), राजसंमद (81) बांसवाडा (31), पाली (14), जालौर (81)

अतः प्रकाशन सामग्री को अधिक उपयोग बनाने हेतु सतत प्रयासों की आवश्यकता है।

प्रकाशन पढने वाले 1639 कृषकों में से प्रथमवार खरीफ, 2005 में मुख्य सिफारिशों को अपनाने वाले लाभान्वित कृषकों का प्रतिशत निम्न प्रकार था–

क.सं.	सिफारिश	प्रथम बार अपनाने वाले कृषक	
		संख्या	प्रतिशत
1	भूमि उपचार	8	0.48
2	प्रमाणित बीज	150	9.15

3	बीज उपचार	157	9.57
4	बुवाई से पूर्व उर्वरक	20	3.05
5	जीवाणु खाद का उपयोग	50	3.05
6	जिप्सम का उपयोग	23	1.40
7	वर्मी कम्पोस्ट	60	3.66
8	जैविक खेती	39	2.37
9	संतुलित उर्वरक	45	2.74
10	खरपतवार नियंत्रक	15	0.91
11	टोप ड्रेसिगं	5	0.30
12	पौधे से पौधे की दूरी	30	1.82
13	फव्वारा सिंचाई	7	0.42
14	इन्टर क्रॉपिगं	8	0.48
15	पौध संरक्षण	87	5.30
	कुल	704	–

अतः उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि कृषकों को खरीफ की प्रकाशित पुस्तिका उपलब्ध करवाने से कृषकों के तकनीकी ज्ञान में वृद्धि हुई है एवं उनके द्वारा उसका उपयोग करने से वह लाभान्वित हुए है।

4.4.2 रबी 2005–06 जिला पुस्तिका का प्रकाशन

दिशा निर्देश अनुसार जिलें के लिये प्रमुख फसलों की पैकेज आफ प्रैक्टिस की 30 हजार से 50 हजार पुस्तिकायें प्रत्येक जिले द्वारा मुद्रित करवायी जानी थी, जिस क्रम में 32380 से लेकर अधिकतम 65000 पुस्तक रबी 2005–06 में मुद्रित करायी गयी, 50000 से अधिक मुद्रित करवाने वाला जिला मात्र जयपुर (65000) था। राज्य में कुल 1538160 रबी 2005–06 में जिला पुस्तिकाओं का प्रकाशन हुआ।

- रबी 2005–06 जिला पुस्तिका

  प्रकाशन पूर्व समस्त जन प्रतिनिधि एवं विधालयों को आवश्यक रूप से वितरित किया जाना था प्रकाशन प्राप्ति का विवरण निम्नसारिणी में दिया गया है :–

क्र.सं.	विवरण	सैम्पलसाइज	प्रकाशन प्राप्त	
			संख्या	प्रतिशत
1.	शिक्षक	443	361	81
2.	जनप्रतिनिधि	649	587	90
3.	अन्य कृषक	1150	974	85
	योग	2242	1922	86

उपरोक्त सर्वेक्षण के परिणामों के आधार पर प्रकाशनों की प्राप्ति 81 प्रतिशत शिक्षकों को 90 प्रतिशत जनप्रतिनिधियों को एवं 85 प्रतिशत अन्य कृषकों की रही। इस प्रकार कुल 86 प्रतिशत कृषकों को प्रकाशन प्राप्त हुआ था । 10 प्रतिशत जनप्रतिनिधि को प्रकाशन प्राप्त नहीं हुआ ।

खण्डवार पुस्तिका की प्राप्ति एवं उसको पढने वालों का विवरण निम्न तालिका में दिया गया है ।

क्र.सं.	खण्ड का नाम	सैम्पल साइज	प्रकाशन प्राप्त		प्रकाशन पढा		प्रकाशन नहीं पढने वालो का प्रतिशत
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	जयपुर	435	381	88	316	83	17
2.	भरतपुर	390	352	90	274	78	22
3.	कोटा	417	336	81	248	74	26
4.	भीलवाडा	270	257	95	225	88	12
5.	उदयपुर	240	201	84	180	90	10
6.	जोधपुर	400	315	79	258	82	18
7.	श्रीगंगानगर	90	80	89	59	74	16
	योग	2242	1922	86	1560	81	19

उपरोक्त तालिका अनुसार राज्य में 86 प्रतिशत व्यक्तियों को प्रकाशन प्राप्त हुआ था सब से कम 79 प्रतिशत जोधपुर खण्ड में तथा सबसे अधिक 95 प्रतिशत भीलवाडा खण्ड में प्राप्त हुआ था ।

राज्य में प्रकाशन प्राप्त करने वाले 81 प्रतिशत कृषकों न प्रकाशन पढा सबसे अधिक 90 प्रतिशत उदयपुर तथा सबसे कम 74 प्रतिशत कोटा एवं श्रीगंगानगर खण्ड में कृषकों ने पढा है ।

प्रकाशन प्राप्त होने के उपरान्त भी 19 प्रतिशत द्वारा उसको नहीं पढा गया। सर्वाधिक 26 प्रतिशत श्रीगंगानगर खण्ड का रहा, जबकि न्यूनतम 10 प्रतिशत उदयपुर खण्ड का रहा ।

- <u>प्रकाशन नहीं पढने का कारण</u>

सर्वेक्षण के आधार पर प्रकाशन नहीं पढने का कारण खण्डवार निम्न तालिका में दिया गया है :–

क.सं.	खण्ड का नाम	प्रकाशन नहीं पढने वालों की सं.	प्रकाशन नहीं पढने का कारण प्रतिशत में			
			निरक्षर	समय नहीं	आवश्यकता नहीं	अन्य
	जयपुर	65	13	17	25	45
	भरतपुर	78	31	19	6	44
	कोटा	88	8	28	8	56
	भीलवाडा	32	51	33	9	7
	उदयपुर	21	3	27	0	70
	जोधपुर	57	31	32	27	10
	श्रीगंगानगर	21	16	23	6	55
	योग	362	21	25	14	40

राज्य में 16 प्रतिशत ने प्रकाशन नहीं पढा था, जिसमें से नहीं पढने वाले व्यक्तियों में 21 प्रतिशत निरक्षर, 25 प्रतिशत ने समय अभाव बताया बताया, 14 प्रतिशत ने आवश्यकता नहीं समझी थी तथा 40 प्रतिशत कृषकों ने अन्य कारण बताते हुए प्रकाशन नहीं पढा ।

अतः भविष्य में प्रकाशित पुस्तक साक्षर व्यक्ति एवं जिसको आवश्यकता है उसीको वितरित किये जाने पर ज्यादा उपयोगी होगी ।

- <u>समय पर प्रकाशन प्राप्तिः—</u>

दिशा निर्देशानुसार रबी पुस्तिका का प्रकाशन व वितरण 5 अक्टूबर, 2005 तक किया जाना था, जिसकी तुलना में जिलेवार पुस्तिका के प्रकाशन व वितरण की अवधि सर्वेक्षण अनुसार खण्डवार निम्न प्रकार है :—

क्र. सं.	खण्ड / जिला	प्रकाशन प्राप्त करने वालों की संख्या	प्राप्ति माह											
			सित.		अक्टू.		नवम्बर		दिसम्बर		जनवरी		फरवरी	
			सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
1	जयपुर	381	—	—	61	16	50	13	108	28	112	29	50	13
2	भरतपुर	352	9	3	78	22	90	26	106	30	23	6	46	13
3	कोटा	352	6	2	10	3	115	33	149	46	46	13	10	3
4	भीलवाडा	257	—	—	—	—	14	6	16	6	177	69	50	19
5	उदयपुर	201	—	—	3	1	83	41	11	6	36	18	68	34
6	जोधपुर	315	—	—	—	—	62	20	78	25	144	45	31	10
7	श्रीगंगानगर	80	—	—	—	—	—	—	35	44	45	56	—	—
	राज्य स्तर	1922	15	1	152	8	414	22	503	26	583	30	255	13

दिशा निर्देश अनुसार ये पुस्तिकाऐ 5 अक्टूबर, 2005 तक वितरित होनी थी, जबकि माह अक्टूबर तक सीकर, झून्झनू, भरतपुर, अलवर, धौलपुर, सवाई माधोपुर एवं टौंक में क्रमशः 33, 60, 11, 4, 66, 54 व 40 प्रतिशत वितरित हुई है ।राज्य स्तर पर कुल अक्टूबर में 8, नवम्बर में 22, दिसम्बर में 26, जनवरी में 30, एवं फरवरी में 13 प्रतिशत रबी पुस्तिका वितरित हुई है । अतः सभी जिलों में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है । खण्ड एवं जिला अधिकारी भविष्य में रबी पुस्तिकाओं का वितरण निर्धारित समय पर फसल बुवाई पूर्व किया जाना सुनिश्चित करें, जिससे कृषकों को अधिक लाभ मिल सके । जिलेवार सूचना परिशिष्ठ 5 पर उपलब्ध है ।

- <u>उपयोगिता (समझने योग्यः)—</u>

पुस्तिका को पढने वालो की राय के अनुसार उसमें वार्षिक साम्रगी कृषक के अनुसार समझने योग्य थी अथवा नहीं यह सर्वेक्षण के दौरान उनकी राय ली गयी । खण्डवार विवरण निम्न प्रकार है :—

क्र. सं.	नाम जिला	प्रकाशित सामग्री समझने योग्य	प्रकाशित सामग्री समझने योग्य पर राय					
			पूर्णरूपेण		आंशिक		बिल्कुल नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	जयपुर	316	243	77	70	22	3	1
2	भरतपुर	274	208	76	66	24	0	0
3	कोटा	248	160	65	83	33	5	2
4	भीलवाडा	225	125	56	95	42	5	2
5	उदयपुर	180	108	60	65	36	7	4
6	जोधपुर	258	180	70	36	14	42	16
7	श्रीगंगानगर	59	48	81	11	19	0	0
	राज्य स्तर	1560	1072	69	426	27	62	4

सर्वेक्षण परिणाम के आधार पर रबी पुस्तिका को पढने वालों में से 69 प्रतिशत प्रकाशन को पूर्ण समझने योग्य बताया, 27 प्रतिशत कृषकों ने आंशिक समझने योग्य, 4 प्रतिशत कृषकों ने बिलकुल नहीं समझने योग्य बताया । जिलेवार सूचना परिशिष्ठ 6 पर उपलब्ध है ।

अतः प्रकाशन में वर्णित सामग्री को स्पष्ट रौचक एवं सरल बनाये जाने की अत्यन्त आवश्यकता है । विशेष रूप से निम्न जिलों में प्रकाशन 20 प्रतिशत से ज्यादा कृषकों की राय में आंशिक रूप से समझने योग्य तथा बिलकुल समझने योग्य नहीं थे, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :–

जयपुर (22), दोसा 48 सीकर 23 अलवर 24 सवाई माधोपुर 69 कोटा 31 झालावाड 46 टोंक 69 भीलवाडा 51 राजसमन्द 62 उदयपुर 78 बांसवाडा 23 डूंगरपुर 41 नागौर 33 जालौर 36 सिरोही 40

अतः इन जिलों द्वारा भविष्य में कृषि साहित्य/पुस्तिका में प्रकाशन हेतु स्पष्ट रोचक एवं सरल भाषा का उपयोग किये जाने पर प्रकाशित सामग्री कृषकों के लिये ज्यादा उपयोगी एवं लाभदायक होगी।

- उपयोगिताः–

सर्वेक्षण के अनुसार पढने वालों की संख्या एवं पढने से नवीन जानकारी प्राप्त व प्राप्त जानकारी को प्रथमबार उपयोग व लाभान्वित कृषकों का खण्डवार विवरण निम्न प्रकार है ।

क्र. सं.	खण्ड	प्रकाशन पढने वालों की संख्या	नवीन जानकारी प्राप्त करने वाले		प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथमबार उपयोग करने वाले कृषक		प्रथमतया सिफारिश के अपनाने से लाभान्वित कृषक		
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	अधिक	कम	बिलकुल नहीं
1	जयपुर	316	241	76	113	36	87	20	6
2	भरतपुर	274	265	97	146	53	71	66	9
3	कोटा	248	212	85	120	48	48	69	3
4	भीलवाडा	225	198	88	122	54	73	34	15
5	उदयपुर	180	123	68	92	51	78	11	3
6	जोधपुर	258	230	89	149	58	146	2	1
7	श्रीगंगानगर	59	44	75	28	47	13	15	0
	राज्य स्तर	1560	1313	84	770	49	516	217	37

सर्वेक्षण परिणाम के अनुसार रबी 2005–06 की जिला पुस्तिका, पढने वालों में से 84 प्रतिशत को नवीन जानकारी प्राप्त हुई तथा 49 प्रतिशत ने प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथमतया उपयोग किया । प्रथमतया सिफारिश का उपयोग करने वालों के अनुसार 67 प्रतिशत अधिक एवं 28 प्रतिशत आशा से कम लाभान्वित है, जबकि 5 प्रतिशत कृषकों के अनुसार वह बिलकुल लाभान्वित नहीं है।
जिलेवार विवरण परिशिष्ठ संख्या 7 दिया गया है

प्रकाशन से कृषकों को नवीन जानकारी प्राप्ती में राज्य स्तर के 84 प्रतिशत से कम रहने वाले जिले निम्न प्रकार है :–

अजमेर (72 प्रतिशत), जयपुर (64 प्रतिशत), दौसा (63 प्रतिशत), सवाई माधोपुर (81 प्रतिशत), झालावाड (79 प्रतिशत), टोंक (78 प्रतिशत), भीलवाडा (82 प्रतिशत), राजसमन्द (80 प्रतिशत), बांसवाडा (15 प्रतिशत), पाली (71 प्रतिशत), श्रीगंगानगर (75 प्रतिशत) ।

अतः प्रकाशन सामग्री को अधिक उपयोगी बनाने हेतु सतत प्रयासों की आवश्यकता है ।

- प्रकाशन पढने वाले 1560 कृषकों में से प्रथमबार रबी 2005–06 में मुंख्य सिफारिश को अपनाने वाले लाभान्वित कृषकों का प्रतिशत निम्न प्रकार था :–

क.सं.	सिफारिश	संख्या	प्रतिशत
1.	भूमि उपचार	18	1.15
2.	प्रमाणित बीज	222	14.23
3.	बीज उपचार	174	11.15
4.	बुवाई से पूर्व उवरक	23	1.47
5.	जीवाणु खाद का उपयोग	76	4.87
6.	जिप्सम का उपयोग	11	0.70
7.	वर्मी कम्पपोस्ट	52	3.33
8.	जैविक खेती	43	2.75
9.	सन्तुलित उवरक	53	3.39
10.	खरपतवार नियंत्रण	8	0.51
11.	टोप ड्रसिंग	5	0.32
12	फव्वारा सिंचाइ	15	0.96
13	पौध संरक्षण	74	4.74
14.	कान्तिक अवस्था पर सिंचाई	33	2.11

अतः उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कृषकों को रबी की प्रकाशित पुस्तिका उपलब्ध करवाने से कृषकों में तकनीकी ज्ञान में वृद्धि हुई है एवं उनके द्वारा उसका उपयोग करने से वह लाभान्वित हुए है ।

4.5 उत्पादकता 150 प्रतिशत सरसों फोल्डर सर्वेक्षण गणना

यह कार्यकंम नागौर, श्रीगंगानगर जिलों में रबी 2005–06 में सरसों की उत्पादकता बढाने हेतु लागू किया था । औसतः उत्पादकता प्रति हैक्टर बढाने की जिलें में महत्ती आवश्यकता थी, वर्तमान में हमारे वैज्ञानिकों ने कई उन्नत किस्में विकसित की हे, जिसके उपयोग से असानी से वृद्वि हो सकती है । इस प्रयास को बढावा देने हेतु एक विशेष कार्यकंम आपरेशन सरसों उत्पादकता 150 प्रतिशत उपरोक्त जिलें में शुरू किया गया था, किसानों, कृषि वैज्ञानिकों एवं कृषि विभाग के अधिकारियो व कर्मचारियों से आव्हान किया था कि समस्त उन्नत कृषि विधियों का प्रयोग करते हुए जिलें में सरसों की औसत उत्पादकता में 150 प्रतिशत तक वृद्वि करने हेतु समस्त प्रयास समन्वित रूप से किये जावे इस अभियान के तहत सरसों फसल के तकनीकी बिन्दुओं का फोल्डर तैयार कर किसानों को वितरित किया गया। नागोर से 50000 व श्री गंगानगर में 50000 फोल्डर रबी 2005–06 में वितरित किये गये थे।

- <u>फोल्डर की प्राप्ति :–</u>

फोल्डर की प्राप्ति एवं उसको पढने वाले का विवरण निम्न तालिका में दिया है:–

क.सं.	खण्ड का नाम	सैम्पल साइज	फोल्डर प्राप्त		फोल्डर पढा		फोल्डर नहीं पढने वालो का प्रतिशत
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	नागौर	100	48	48	44	92	8
2.	श्रीगंगानगर	90	68	75	68	100	0
	योग	190	116	61	112	97	3

उपरोक्त तालिका अनुसार दोनो जिलों का औसत 61 प्रतिशत कृषकों को प्रकाशन प्राप्त हुआ था। नागौर में 48 व श्रीगंगानगर में 75 प्रतिशत प्रकाशन प्राप्त हुआ ।

59 प्रतिशत कृषकों ने प्रकाशन पढा ,नागोर में 44 प्रतिशत एवं श्रीगंगानगर में 75 प्रतिशत कृषकों ने पढा था । प्रकाशन प्राप्त होने के उपरान्त भी 2 प्रतिशत द्वारा उसको नहीं पढा गया है ।

- <u>प्रकाशन नहीं पढने का कारण :–</u>

प्रकाशन नहीं पढने के कारण जिलेवार निम्न तालिका में दर्शाये गये है :–

क. सं.	जिला	प्रकाशन नहीं पढनें वालों की संख्या	प्रकाशन नहीं पढने का कारण							
			निरक्षर		समय नहीं		आवश्यकता नहीं		अन्य	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	नागौर	4	–	13	–	23	–	0	–	64

मात्र नागौर जिलें में 4 प्रतिशत ने प्रकाशन नहीं पढा था, जिसमें से नहीं पढने वाले व्यक्तियों में से 13 प्रतिशत निरक्षर थे, 23 प्रतिशत पर समय नहीं था, व 64 प्रतिशत ने

अन्य कारण बताते हुए प्रकाशन नहीं पढा था । भविष्य में फोल्डर साक्षर व्यक्ति को ही वितरित किया जावे ।

- समय पर प्राप्ति :—

सरसों फसल की बुवाई का समय ध्यान में रखते हुए फोल्डर का वितरण बुवाई पूर्व होना था । फोल्डरों का वितरण सर्वेक्षण परिणाम अनुसार माहवार निम्न प्रकार रहा है :—

क्र. सं.	खण्ड / जिला	प्रकाशन प्राप्त करने वालों की संख्या	प्राप्ति माह सित.		अक्टू.		नवम्बर		दिसम्बर		जनवरी		फरवरी	
			सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.
1.	नागौर	48	—	—	48	100	—	—	—	—	—	—	—	—
2.	श्रीगंगानगर	68	—	—	—	—	—	—	—	—	38	56	30	44
	योग	116	—	—	48	42	—	—	—	—	38	32	30	26

उपरोक्त तालिका के अनुसार सरसों की बुवाई का समय देखते हुए श्री गंगानगर में बहुत देरी से वितरित किया गया, भविष्य में इसका बुवाई से पूर्व प्रकाशन एवं वितरण सुनिश्चित किया जावे तो कृषकों को अधिक लाभ मिलेगा ।

- उपयोगिता (समझने योग्य) :—

रबी 2005—06 की सरसों के फोल्डर को पढने वालों की राय के अनुसार उसमें वर्णित सामग्री कृषकों के अनुसार समझने योग्य थी अथवा नहीं के सम्बन्ध में सर्वेक्षण के दोरान उनकी राय ली गई, जिसका विवरण निम्न प्रकार से है:—

क्र. सं.	नाम जिला	प्रकाशन पढने वालों की संख्या	प्रकाशित सामग्री समझने योग्य पर राय					
			पूर्णरूपेण		आंशिक		बिलकुल नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	नागौर	44	36	82	8	18	0	0
2.	श्रीगंगानगर	68	45	65	23	35	0	0
	योग :—	112	81	72	31	28	0	0

उपरोक्त तालिका के अनुसार कुल पढने वालों की संख्या 112 में 72 प्रतिशत कृषकों ने फोल्डर में प्रकाशित सामग्री को पूर्ण समझने योग्य बताया तथा 28 प्रतिशत कृषकों ने आंशिक समझने योग्य बताया था ।

अतः प्रकाशन में वर्णित सामग्री को सरल, स्थानीय भाषा में बनाये जाने की विशेषकर श्रीगंगानगर जिलें में अत्यन्त आवश्कता है ।

- उपयोगिताः–

सर्वेक्षण के अनुसार पढने वालों की संख्या एवं पढने से नवीन जानकारी प्राप्त व प्राप्त जानकारी को प्रथमबार उपयोग व लाभान्वित कृषकों का जिलेवार वर्णन निम्न तालिका में दिया गया है !

क्र. सं.	जिला	प्रकाशन पढने वालों की संख्या	नवीन जानकारी प्राप्त करने वाले		प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथमबार उपयोग करने वाले		प्रथमतया सिफारिश के अपनाने से लाभान्वित कृषक		
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	अधिक	कम	बिलकुल नहीं
1.	नागौर	44	40	83	26	54	18	2	6
2.	श्रीगंगानगर	68	20	30	10	14	2	8	0
	योग	112	60	53	36	32	20	10	6

उपरोक्त तालिका अनुसार रबी 2005–06 में सरसों फसल का फोल्डर पढने वालों में से 53 प्रतिशत को नवीन जानकारी प्राप्त हुई है । श्रीगंगानगर में मात्र 30 प्रतिशत कृषकों को नवीन जानकारी प्राप्त हुई । 32 प्रतिशत ने प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश को प्रथमबार उपयोग किया । प्रथमतया सिफारिश का उपयोग करने वालों के अनुसार 56 प्रतिशत को अधिक लाभ, 28 प्रतिशत को कम लाभ, जबकि 6 प्रतिशत कृषकों के अनुसार वे बिलकुल भी लाभान्वित नहीं हुए ।

प्रकाशन से श्रीगंगानगर जिलें के 14 प्रतिशत कृषकों ने नवीन जानकारी प्राप्त कर मात्र प्रथमबार काम में ली गयी ।

क्र.सं.	सिफारिश	संख्या	प्रतिशत
1.	भूमि उपचार	17	15.17
2.	जीवाणु खाद का उपयोग	9	8.03
3.	खरपतवार नियंत्रण	2	1.78
4.	टोप ड्रेसिंग	8	7.14

अतः उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कृषकों को रबी की प्रकाशित फोल्डर उपलब्ध कराने से कृषकों के तकनीकी ज्ञान में वृद्धि हुई है एवं उनके द्वारा उसका उपयोग करने से वह लाभान्वित हुआ है। भविष्य में जिलें के अधिकारी प्रकाशन समय पर वितरण व

सरल भाषा का उपयोग कर अधिक प्रभावशाली बनावें, जिससे कृषकों को अधिक से अधिक लाभ मिल सके ।

- उत्पादकताः—

जिला	गत 5 वर्ष का औसत (2000—01से 2004—05)			2004—05			2005—06			गत 5 वर्षो के ओसत उत्पादकता की तुलना में वृद्वि	गत वर्षो की तुलना में उत्पादकता में वृद्वि
	क्षेत्र है.	पैदावार मैं.टन	पैदावार किलोग्राम / हैक्टर	क्षेत्र है.	पैदावार मैं.टन	पैदावार किलोग्राम / हैक्टर	क्षेत्र है.	पैदावार मैं.टन	पैदावार किलोग्राम / हैक्टर	किलोग्राम/ हैक्टर .	पैदावार किलोग्राम/ हैक्टर
नागौर	74713	79319	1062	132749	132143	995	150968	199291	1320	258	325
श्रीगंगानगर	223845	288590	1289	303138	365919	1207	285380	421427	1477	188	270

नागौर एवं श्रीगंगानगर जिलों में वर्ष 2005—06 के दौरान उत्पादकता 150 प्रतिशत सरसों अभियान को क्रियान्वयन एवं इससे सम्बन्धित साहित्य फोल्डर के रूप में कृषकों को उपलब्ध कराये जाने के फलस्वरूप गत 5 वर्षों की तुलना में एवं गत वर्ष की तुलना में सरसों की उत्पादकता में नागौर जिलें में 25 प्रतिशत तथा 32 प्रतिशत एवं श्री गंगानगर जिलें में क्रमशः 15 प्रतिशत तथा 22 प्रतिशत उल्लेखनीय वृद्वि हुई है ।

4.6 ''टारगेट 20 + प्रतिशत सरसों'' फोल्डर सर्वेक्षण परिणाम

वर्ष 2005–06 में सरसों की उत्पादकता 20 प्रतिशत बढाने हेतु भरतपुर, चित्तौड एवं पाली जिलों में ''टारगेट 20 + उत्पादकता '' अभियान चलाया गया । इस अभियान के अन्तर्गत लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अन्य ससंसाधनों के साथ साथ कृषकों को उत्पादकता बढाने हेतु जिला स्तर पर फोल्डर का प्रकाशन कर कृषकों को वितरित किया गया ।

इस अभियान के अन्तर्गत भरतपुर में 2, 81, 000, चित्तौड में 50000, एवं पाली में 25000 फोल्डरो का प्रकाशन कर कृषकों को वितरित किया गया ।

प्रकाशित एवं वितरित फोल्डरों का विशेष अध्ययन सर्वेक्षण अनुसार निम्न परिणाम प्राप्त हुए ।

- फोल्डरों की प्राप्ति एवं अध्ययन :–

जिलेवार फोल्डर की प्राप्ति एवं उसको पढने वालों का विवरण निम्न तालिका में दिया है :–

क.सं.	खण्ड का नाम	सैम्पल साइज	फोल्डर प्राप्त		फोल्डर पढा		फोल्डर नहीं पढने वालो का प्रतिशत
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	भरतपुर	80	54	67	52	96	4
2.	चित्तौढगढ	100	60	60	58	97	3
3.	पाली	100	28	28	26	93	7
	योग	280	142	51	136	96	4

उपरोक्त तालिका अनुसार 51 प्रतिशत कृषकों को प्रकाशन प्राप्त हुआ था । 96 प्रतिशत कृषकों ने प्रकाशन पढा । प्रकाशन प्राप्त होने के उपरान्त भी 4 प्रतिशत द्वारा उसको नहीं पढा गया है ।

- प्रकाशन नहीं पढने का कारण :–

प्रकाशन नहीं पढने के कारण जिलेवार निम्न तालिका में दिये गये है :–

क. सं.	जिला	प्रकाशन नहीं पढनें वालों की संख्या	प्रकाशन नहीं पढने का कारण							
			निरक्षर		समय नहीं		आवश्यकता नहीं		अन्य	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	भरतपुर	2	2	100	–	–	–	–	–	–
2.	चित्तौड	2	2	100	–	–	–	–	–	–
3.	पाली	2	2	100	–	–	–	–	–	–
	योग	6	6	100	–	–	–	–	–	–

तीनों जिलों में कुल 4 प्रतिशत ने प्रकाशन नहीं पढा था, जिसमें से नहीं पढने वाले व्यक्ति निरक्षर थे । अतः भविष्य में प्रकाशित फोल्डर साक्षर व्यक्तियों को वितरित किया जाने पर ज्यादा उपयोगी होगा ।

- समय पर प्राप्ति :–

सरसों फसल की बुवाई का समय ध्यान में रखते हुए फोल्डर का वितरण बुवाई पूर्व होना था, जिसकी तुलना में जिलेंवार फोल्डरों का वितरण सर्वेक्षण परिणामों अनुसार माहवार निम्न प्रकार रहा :–

प्राप्ति माह

क्र. सं.	खण्ड / जिला	प्रकाशन प्राप्त वालों की संख्या	अक्टू.		नवम्बर		दिसम्बर		जनवरी	
			सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.
1.	भरतपुर	54	43	80	9	16	2	4		–
2.	चित्तौड	60	–	–	14	23	37	62	9	15
3.	पाली	28	28	100	–	–	–	–		–
	योग	142	71	50	23	16	39	28	9	6

उपरोक्त तालिका के अनुसार 50 प्रतिशत कृषकों को ही अक्टूबर तक फोल्डर वितरित किये गये । बुवाई से पूर्व उनका प्रकाशन एवं वितरण सुनिश्चित किया जाना चाहिये था, जिससे कृषकों को अधिक से अधिक लाभ हो सके ।

- उपयोगिता (समझने योग्य) :–

रबी 2005–06 की सरसों के फोल्डर को पढने वालो की राय के अनुसार उसमें वर्णित सामग्री समझने योग्य थी अथवा नहीं के सम्बन्ध में सर्वेक्षण के दौरान उनकी राय ली गई थी, जिसका विवरण निम्न प्रकार है :–

क्र. सं.	नाम जिला	प्रकाशन पढने वालों की संख्या	प्रकाशित सामग्री समझने योग्य					
			पूर्णरूपेण		आंशिक		बिलकुल नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	भरतपुर	52	38	73	12	23	2	4
2.	चित्तौडगढ	58	43	74	15	26	0	0
3.	पाली	26	26	100	0	0	0	0
	योग	136	107	79	27	20	2	1

उपरोक्त तालिका अनुसार कुल पढने वालों की संख्या 136 में से 79 प्रतिशत कृषकों ने फोल्डरों में प्रकाशित सामग्री पूर्ण समझने योग्य बताया तथा 20 प्रतिशत कृषकों ने आंशिक समझने योग्य तथा 1 प्रतिशत कृषकों ने बिलकुल नहीं समझने योग्य बताया ।

अतः प्रकाशन में वर्णित सामग्री को स्पष्ट रौचक एवं सरलतम बनाये जाने की विशेषकर भरतपुर व चित्तौड जिलों को अत्यन्त आवश्यकता है । भविष्य में उक्त जिलों द्वारा ध्यान देने की विशेष आवश्यकता है ।

- उपयोगिता :–

सर्वेक्षण के अनुसार पढने वालों की संख्या एवं पढने से नवीन जानकारी प्राप्त व प्राप्त जानकारी को प्रथमबार उपयोग व लाभान्वित कृषकों को जिलेवार निम्न तालिका में दिया गया है :–

क्र. सं.	जिला	प्रकाशन पढने वालों की संख्या	नवीन जानकारी प्राप्त करने वाले		प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथमबार उपयोग करने वाले		प्रथमतया सिफारिश के अपनाने से लाभान्वित कृषक		
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	अधिक	कम	बिलकुल नहीं
1.	भरतपुर	52	41	76	20	37	17	1	2
2.	चित्तौड	58	55	92	13	22	5	4	4
3.	पाली	26	26	100	10	36	10	0	0
	योग	136	122	89	43	30	32	5	6

उपरोक्त तालिका अनुसार रबी 2005–06 में सरसों फसल पर फोल्डर पढने वालों में से 89 प्रतिशत को नवीन जानकारी प्राप्त हुई तथा 30 प्रतिशत ने प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथमबार उपयोग किया प्रथमतया तथा सिफारिश का उपयोग करने वालो के अनुसार 75 प्रतिशत अधिक व 12 प्रतिशत कम लाभान्वित हुए, जबकि 13 प्रतिशत कृषकों के अनुसार वे बिलकुल भी लाभान्वित नहीं हुए ।

प्रकाशन से कृषकों को नवीन जानकारी प्राप्त में तीनों जिलों का औसत 89 प्रतिशत है औसत से कम रहने वाला जिला भरतपुर 76 प्रतिशत है ।

प्रकाशन पढने वाले 136 कृषकों में से प्रथमबार सरसों फसल में मुख्य सिफारिश को अपनाने वाले लाभान्वित कृषकों का प्रतिशत निम्न रहा है :–

क्र.सं.	सिफारिश	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रमाणित बीज	12	8.82
2.	बीज उपचार	12	8.82
3.	जिप्सम	13	9.55
4.	समय पर सिंचाई	2	1.47
5.	संतुलित उर्वरक	4	2.94

अतः उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कृषकों को रबी में प्रकाशित फोल्डर उपलब्ध कराने से कृषकों में तकनीकी ज्ञान की वृद्वि हुई है । अब उनके द्वारा उसका उपयोग कराने से वह लाभान्वित हुआ है ।

- उत्पादकता :–

सरसों फसल के अन्तर्गत वर्ष 2004–05 एवं 2005–06 में क्षेत्रफल उत्पादन एवं उत्पादकता का विवरण निम्न प्रकार से है :–

वर्ष 2004–05 एवं 2005–06 का तुलनात्मक विवरण

जिला	गत 5 वर्ष का ओसत 2004–05 तक			2004–05			2005–06			वर्ष 2004–05 से वर्ष 2005–06 में वृद्वि / कमी		
	क्षेत्र है.	उत्पादन मैं.टन	उत्पादकता किलोग्राम / हैक्टर	क्षेत्र है.	उत्पादन मैं.टन	उत्पादकता किलोग्राम / हैक्टर	क्षेत्र है.	उत्पादन मैं.टन	उत्पादकता किलोग्राम / हैक्टर	क्षेत्र है.	उत्पादन	उत्पादकता किलोग्राम / हैक्टर
भरतपुर	187333	225185	1202	236365	387369	1258	241753	310370	1284	5188	13001	26 (2 प्रतिशत)
चित्तौड	29166	40739	1379	86007	140750	1636	112706	220273	1954	26699	89523	318 (19प्रतिशत)
पाली	23839	20506	860	35609	29155	819	44567	28723	640	8958	–412	–175 (–21 प्रतिशत)

उपरोक्त तालिका अनुसार सरसों टारगेट 20 + उत्पादकता रबी 2005–06 कार्यक्रम में 2004–05 की तुलना में भरतपुर में 2, चित्तौड में 19 प्रतिशत उत्पादकता में वृद्वि हुई । पाली जिलें में फ्लावरिंग स्टेज में सर्दी पडने व नहर की बंदी रहने से समय पर सिंचाई न मिलने पर 21 प्रतिशत पैदावार में कमी आई है ।

4.7 "आपरेशन 150 प्रतिशत जौ " फोल्डर सर्वेक्षण परिणाम

राजस्थान में ही विकसित नई किस्में, प्रचालित किस्मों की अपेक्षा काफी अधिक उपज देती है । बीजोपचार खाद एवं उर्वरकों का संतुलित उपयोग क्रातिक अवस्थाओं पर सिंचाई आदि उन्नत शस्य क्रियाओं को अपनाकर उपज डेढ गुना की जा सकती है । इस उद्देश्य से जिला जयपुर एवं सीकर में आप्रेरशन 150 प्रतिशत जौ का विशेष अभियान वर्ष 2005–06 मे चलाया गया । इसके अन्तर्गत जौ फसल का उत्पादन बढाने वाले प्रभावी बिन्दुओं का फोल्डर जिला स्तर पर प्रकाशन कर जिलों में कृषकों को वितरित किये गये ।

इस अभियान के तहत जयपुर में 20000 व सीकर में 25000 फोल्डरों का वितरण किया गया था ।

- फोल्डरों की प्राप्ति :–

जिलेवार फोल्डर की प्राप्ति एवं उसको पढने वालों का विवरण निम्न तालिका में दिया गया है :–

क.सं.	जिला	सैम्पल साइज	फोल्डर प्राप्त		फोल्डर पढा		फोल्डर नहीं पडने वालो का प्रतिशत
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	जयपुर	90	84	93	68	81	19
2.	सीकर	100	56	56	39	70	30
	योगः–	190	140	74	107	76	24

उपरोक्त सर्वेक्षण परिणामों के अनुसार 74 प्रतिशत कृषकों को प्रकाशन प्राप्त हुआ था । सीकर में मात्र 56 प्रतिशत प्रकाशन की प्राप्ति रही । प्रकाशन प्राप्त करने वाले कृषकों में से पढने वालो का औसत 76 प्रतिशत था, प्रकाशन प्राप्त होने के उपरान्त भी 24 प्रतिशत द्वारा उसको नहीं पढा गया ।

- प्रकाशन नहीं पढने का कारण :–

प्रकाशन नहीं पढने का कारण जिलेवार वर्णन निम्न तालिका में दिया गया है :–

क. सं.	जिला	प्रकाशन नहीं पढनें वालों की संख्या	प्रकाशन नहीं पढने का कारण (प्रतिशत में)			
			निरक्षर	समय नहीं	आवश्यकता नहीं	अन्य
1.	जयपुर	16	41	27	14	18
2.	सीकर	17	2	59	24	15
	योग	33	16	48	21	16

उपरोक्त तालिका के अनुसार दोनो जिलों में 18 प्रतिशत ने प्रकाशन नहीं पढा था, जिससे नहीं पढने वाले व्यक्तियों में 16 प्रतिशत निरक्षर, 48 प्रतिशत ने समय नहीं होना बताया, 21 प्रतिशत ने आवश्यकता नहीं समझी तथा 16 प्रतिशत ने अन्य कारण बताते हुए प्रकाशन नहीं पढा है ।

भविष्य में फोल्डर, साक्षर एव जिसके पास पढने का समय हो उसको वितरित किया जावे ।

- <u>समय पर प्राप्ति :–</u>

जौ कि बुवाई समय अनुसार इस फोल्डर का वितरण माह नवम्बर से पूर्व ही वितरित किया जाना था, जिसकी तुलना में सर्वेक्षण अनुसार माहवार वितरण निम्न प्रकार से रहा है:–

प्राप्ति माह

क्र. सं.	खण्ड / जिला	प्रकाशन प्राप्त वालों की संख्या	अक्टू.		नवम्बर		दिसम्बर		जनवरी	
			सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.
1.	जयपुर	84	–	–	84	100	–	–	–	–
2.	सीकर	56	21	37	15	27	20	36	–	–

जौ फसल की बुवाई मध्य अक्टूबर से आरभ्भ होकर दिसम्बर के तीसरे सप्ताह तक की जाती है । बुवाई से पूर्व वितरित होना अधिक लाभदायक होता । सीकर जिलें में इसका वितरण दिसम्बर, 2005 तक किया गया था, भविष्य में इसको समय पर वितरण किया जाना सुनिश्चित किया जावे, जिससे कृषकों को अधिक लाभ हो सके।

- <u>उपयोगिता ''समझने योग्य'' :–</u>

रबी 2005–06 में ''आपरेशन 150 प्रतिशत जौ'' फोल्डर पढने वालों की राय के अनुसार उसमें वर्णित सामग्री कृषक के अनुसार समझने योग्य थी अथवा नहीं पर सर्वेक्षण के दौरान उनकी राय ली गयी, जिनका विवरण निम्न प्रकार है :–

क्र. सं.	नाम जिला	प्रकाशन पढने वालों की संख्या	प्रकाशित सामग्री समझने योग्य					
			पूर्णरूपेण		आंशिक		बिलकुल नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	जयपुर	68	53	78	15	22	0	0
2.	सीकर	39	18	46	12	31	9	23
	योग :–	107	71	66	27	25	9	9

सर्वेक्षण परिणामों के आधार पर दोनो जिलों में कुल पढने वालों की संख्या 107 में 66 प्रतिशत कृषकों ने प्रकाशन में प्रकाशित सामग्री को पूर्णरूपेण समझने योग्य बताया है ।

तथा 25 प्रतिशत कृषकों ने आंशिक समझने योग्य तथा 9 प्रतिशत कृषकों ने बिलकुल नहीं समझने योगय बताया है ।

- उपयोगिताः–

सर्वेक्षण के अनुसार पढने वालों की संख्या एवं पढने से नवीन जानकारी प्राप्त व प्राप्त जानकारी के प्रथमबार उपयोग व लाभान्वित कृषकों का जिलेवार विवरण निम्न प्रकार हैः–

क्र. सं.	जिला	प्रकाशन पढने वालों की संख्या	नवीन जानकारी प्राप्त करने वाले		प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथमबार उपयोग करने वाले		प्रथमतया सिफारिश के अपनाने से लाभान्वित कृषक		
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	अधिक	कम	बिलकुल नहीं
1.	जयपुर	63	32	38	11	13	5	5	1
2.	सीकर	39	31	55	20	36	20	0	0
	योग	107	63	45	31	22	25	5	1

सर्वेक्षण परिणामों के अनुसार रबी 2005–06 के जौ फसल में फोल्डर से पढने वालों में से 45 प्रतिशत को नवीन जानकारी प्राप्त हुई है, जिसमे से 22 प्रतिशत ने प्रकाशित सामग्री को प्रथमबार उपयोग किया । प्रथमतया सिफारिश का उपयोग करने वालों के अनुसार 81 प्रतिशत कृषक अधिक एवं 16 प्रतिशत आशा से कम तथा 3 प्रतिशत कृषकों के अनुसार वह बिलकुल लाभान्वित नहीं हुआ हैं । जयपुर जिलें में नवीन जानकारी मात्र 38 प्रतिशत कृषकों को हुई औसत 45 प्रतिशत से कम है । अतः प्रकाशन सामग्री को अधिक उपयोगी बनाने हेतु अथक प्रयासों की आवश्यकता है ।
प्रकाशन पढने वाले 107 कृषकों में से जौ फसल में प्रथमवार रबी 2005–06 में मुख्य सिफारिशों को अपनाने वाले लाभान्वित कृषकों का प्रतिशत निम्न प्रकार है :–

क्र.सं.	सिफारिश	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रमाणित बीज	9	8.41
2.	भूमि उपचार	5	4.67
3.	बीज उपचार	8	7.47
4.	जीवाणु खाद	7	6.54
5.	वर्मी कम्पोस्ट	2	1.86
6.	जैविक खाद	2	1.86

अतः उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि कृषकों को रबी का प्रकाशित फोल्डर उपलब्ध कराने से कृषकों के तकनीकी ज्ञान में वृद्वि हुई है एवं उनके द्वारा इसका उपयोग करने से वह लाभान्वित हुए है ।

- उत्पादकता आपरेशन 150 प्रतिशत जौ उत्पादकता वृद्धि अभियान रबी 2005–06 के फलस्वरूप गत वर्षो की औसत एवं गत वर्ष की तुलना में जिलेवार क्षेत्रफल उत्पादन एवं उत्पादकता का विवरण निम्न प्रकार है :–

जिला	गत 5 वर्ष का ओसत 2004–05 तक			2004–05			2005–06			वर्ष 2004–05 से वर्ष 2005–06 में वृद्धि / कमी		
	क्षेत्र है.	उत्पादन मैं.टन	उत्पादकता किलोग्राम / हैक्टर	क्षेत्र है.	उत्पादन मैं.टन	उत्पादकता किलोग्राम / हैक्टर	क्षेत्र है.	उत्पादन मैं.टन	उत्पादकता किलोग्राम / हैक्टर	क्षेत्र है.	उत्पादन मैं.टन	उत्पादकता किलोग्राम / हैक्टर
जयपुर	52148	129076	2475	48655	129723	2666	47201	156538	3316	–1454	26815	650(24 प्रति. +)
सीकर	21550	51651	2397	21281	51933	2440	23488	44013	1874	1207	–7920	566(23 प्रति.–)

उपरोक्त तालिका के अनुसार जौ आपरेशन 150 प्रतिशत उतपादकता वृद्धि अभियान 2005–06 कार्यक्रम में रबी 2004–05 की तुलना में रबी 2005–06 में जौ उत्पादकता में जिला जयपुर में 24 प्रतिशत की वृद्धि हुई, वहीं सीकर जिलें में सर्दी एवं इयरिंग स्टेज पर ओले पडने से तथा बिजली की कमी रहने से उचित समय पर सिंचाई न होने से पैदावार में 23 प्रतिशत की कमी आई है ।

परिशिष्ठ संख्या 1

क्र0सं0	जिले का नाम	लक्ष्य	प्राप्ति
1	अजमेर	100	89
2	जयपुर	100	90
3	दौसा	100	96
4	सीकर	100	100
5	झुंझुंनूं	100	60
6	अलवर	100	98
7	भरतपुर	100	80
8	सवाई माधोपुर	100	36
9	करौली	100	100
10	धौलपुर	100	76
11	बारा	100	96
12	बून्दी	100	47
13	कोटा	100	90
14	झालावाड	100	100
15	टोंक	100	84
16	भीलवाडा	100	70
17	चित्तोडगढ	100	100
18	राजसमंद	100	100
19	बांसवाडा	100	100
20	डूंगरपुर	100	100
21	उदयपुर	100	40
22	पाली	100	100
23	सिरोही	100	100
24	जालौर	100	100
25	नागौर	100	100
26	गंगानगर	100	90
		2600	2242

परिशिष्ठ संख्या 2

क्र.	खंड/जिला	प्रकाशन प्राप्त करने वालों की सं0	प्राप्ति माह											
			जून		जुलाई		अगस्त		सितंबर		अक्टूबर		नवम्बर	
			संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%	संख्या	%
1	अजमेर	88	–	–	–	–	48	54.54	40	45.45	–	–	–	–
2	जयपुर	88	–	–	–	–	88	100	–	–	–	–	–	–
3	दोसा	74	–	–	–	–	–	–	74	100	–	–	–	–
4	सीकर	97	–	–	45	46.39	40	41.23	12	12.37	–	–	–	–
5	झूंझंनू	55	–	–	55	100.0	–	–	–	–	–	–	–	–
6	भरतपुर	71	–	–	–	–	9	12.67	22	30.98	40	56.33	–	–
7	अलवर	83	–	–	17	20.48	45	54.21	21	25.30	–	–	–	–
8	धौलपुर	76	–	–	–	–	70	92.16	6	7.89	–	–	–	–
9	स0माधोपुर	35	–	–	1	2.85	17	48.57	4	11.42	13	37.14		
10	करौली	100	–	–	15	15	85	85	–	–	–	–	–	–
11	बारां	92	–	–	–	–	7	7.60	85	92.39	–	–	–	–
12	कोटा	90	–	–	–	–	30	33.33	60	66.66	–	–	–	–
13	बून्दी	37	–	–	–	–	37	100			–	–	–	–
14	झालावाड	93	–	–	–	–	47	50.53	46	49.46	–	–	–	–
15	टौंक	69	–	–	11	15.94	58	84.05	–	–	–	–	–	–
16	भीलवाडा	60	–	–	17	28.33	16	26.66	21	35.0	6	10.0	–	–
17	चितौड	100	–	–	14	14	86	86	–	–	–	–	–	–
18	राजसंमद	100	–	–			70	70	30	30	–	–	–	–
19	उदयपुर	23	–	–	–	–	9	39.13	14	60.86	–	–	–	–
20	बांसवाडा	71	–	–	71	100	–	–	–	–	–	–	–	–
21	डूगंरपुर	98	18	18.36	25	25.51	41	41.83	8	8.16	2	2.04	4	4.08
22	पाली	98	–	–	–	–	–	–	98	100	–	–	–	–
23	नागौर	77	–	–	24	31.16	53	68.83	–	–	–	–	–	–
24	जालौर	53	–	–	–	–	43	81.13	10	18.86	–	–	–	–
25	सिरोही	94	–	–	–	–	94	100	–	–	–	–	–	–
26	गंगानगर	79	–	–	–	–	25	31.64	30	37.97	24	30.37	–	–
	राज्य स्तर	2001	18	0.9	295	15	1018	51	581	29	85	4	4	0.2

परिशिष्ट संख्या 3

क्र.	नाम जिला	प्रकाशन पढने वालों की सं0	प्रकाशित सामग्री समझने योग्य					
			पूर्णरूपेण		आंशिक		बिल्कुल नहीं	
			सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
1	अजमेर	76	65	86	9	12	2	2
2	जयपुर	72	57	79	15	21	0	0
3	दौसा	60	30	50	30	50	0	0
4	सीकर	78	63	81	15	19	0	0
5	झूंझूनू	42	37	88	5	12	0	0
6	भरतपुर	45	45	100	0	0	0	0
7	अलवर	62	39	63	17	27	6	10
8	धौलपुर	64	53	83	11	17	0	0
9	सवाई माधोपुर	24	8	33	12	50	4	17
10	करौली	84	74	88	10	12	0	0
11	बारां	80	66	83	14	18	0	0
12	कोटा	65	35	54	30	46	0	0
13	बून्दी	28	28	100	0	0	7	0
14	झालावाड	67	39	58	23	34	5	7
15	टौंक	60	30	50	24	40	6	10
16	भीलवाडा	46	35	76	11	24	0	0
17	चित्तौड	85	65	76	20	24	0	0
18	राजसंमद	97	26	27	61	63	10	10
19	उदयपुर	22	8	36	14	64	0	0
20	बासंवाडा	59	55	93	4	7	0	0
21	डूगंरपुर	87	55	63	32	37	0	0
22	पाली	72	42	58	30	42	0	0
23	नागौर	69	60	87	9	13	0	0
24	जालौर	53	52	98	1	2	0	0
25	सिरोही	78	68	87	10	13	0	0
26	श्रीगंगानगर	64	46	72	18	28	0	0
	राजस्तर	1639	1181	72	425	26	33	2

परिशिष्ठ 4

क्र. सं.	नाम खण्ड	प्रकाशन पढने वालों की सं0	नवीन जानकारी प्राप्त करने वाले		प्रकाश सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथम बार उपयोग करने वाले कृषक		प्रथमतया सिफारिश के अपनाने से लाभान्वित कृषक		
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	अधिक	कम	बिल्कुल नहीं
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	अजमेर	76	57	75	8	11	8	0	0
2	जयपुर	72	24	33	15	21	6	9	0
3	सीकर	78	75	96	48	61	32	15	1
4	दौसा	60	49	81	15	25	9	3	3
5	झुझंनू	42	42	100	10	18	10	0	0
6	भरतपुर	45	44	98	96	58	19	3	4
7	अलवर	62	52	84	10	16	10	0	0
8	धौलपुर	64	56	87	26	40	7	13	6
9	स0 माधोपुर	24	20	83	4	17	4	0	0
10	करौली	84	84	100	7	8	0	7	0
11	बारां	80	64	80	13	16	8	5	0
12	कोटा	65	65	100	21	32	16	5	0
13	बून्दी	28	27	96	15	53	10	5	0
14	झालावाड	67	50	74	26	38	16	9	1
15	टौंक	60	43	72	18	30	6	12	0
16	भीलवाडा	46	40	87	16	35	8	7	1
17	चित्तौड	85	82	96	44	52	21	16	7
18	राजसंमद	97	78	81	70	72	48	22	0
19	उदयपुर	22	22	100	4	19	4	0	0
20	बांसवाडा	59	18	31	8	14	8	0	0
21	डूगंरपुर	87	81	93	64	74	49	12	3
22	पाली	72	61	87	41	58	41	0	0
23	नागौर	69	63	91	28	41	22	2	4
24	जालौर	53	51	81	47	89	28	14	4
25	सिरोही	78	75	96	48	62	48	0	0
26	श्रीगंगानगर	64	56	87	46	72	24	22	0
	राज्य स्तर	1639	1421	87	677	41	462	181	31

परिशिष्ट संख्या 5

क. सं.	खण्ड / जिला	प्रकाशन प्राप्त करने वालों की संख्या	प्राप्ति माह सित.		अक्टू.		नवम्बर		दिसम्बर		जनवरी		फरवरी	
			सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.	सख्या	प्रति.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
1.	अजमेर	87	—	—	—	—	—	—	50	58	20	23	17	20
2.	जयपुर	88	—	—	—	—	—	—	—	—	60	68	28	32
3.	दौसा	63	—	—	—	—	—	—	35	56	23	36	5	8
4.	सीकर	91	—	—	30	33	40	44	12	13	9	10	—	—
5.	झून्झनू	52	—	—	31	60	10	20	11	20	—	—	—	—
6.	भरतपुर	65	1	2	7	11	10	15	—	—	2	3	45	69
7.	अलवर	76	7	9	3	4	29	38	16	21	21	28	—	—
8	धोलपुर	76	—	—	50	66	20	26	6	8	—	—	—	—
9	सवाई माधोपुर	35	1	3	18	52	1	3	14	40	1	2	—	—
10	करौली	100	—	—	—	—	30	30	70	70	—	—	—	—
11	बांरा	93	—	—	—	—	20	22	35	38	38	40	—	—
12 .	कोटा	85	—	—	22	26	63	74	—	—	—	—	—	—
13	बून्दी	35	—	—	9	26	26	74	—	—	—	—	—	—
14	झालावाड	83	—	—	60	72	19	23	4	5	—	—	—	—
15	टौंक	40	6	15	10	25	4	10	6	15	4	10	10	25
16	भीलवाडा	59	—	—	—	—	—	—	—	—	39	66	20	34
17	चित्तौड	98	—	—	—	—	14	14	16	17	68	69	—	—
18	राजसमन्द	100	—	—	—	—	—	—	—	—	70	70	30	30
19	उदयपुर	29	—	—	—	—	—	—	11	38	18	62	—	—
20	बांसवाडा	76	—	—	—	—	76	100	—	—	—	—	—	—
21	डूंगरपुर	96	—	—	3	3	7	7	—	—	18	19	68	70
22	पाली	100	—	—	—	—	—	—	—	—	100	100	—	—
23	नागौर	62	—	—	—	—	62	100	—	—	—	—	—	—
24	जालौर	58	—	—	—	—	—	—	—	—	27	47	31	53
25	सिरोही	95	—	—	—	—	—	—	78	82	17	18	—	—
26	श्रीगंगानगर	80	—	—	—	—	—	—	35	44	45	56	—	—
	राज्य स्तर	1922	15	1	152	8	414	22	503	26	583	30	255	13

परिशिष्ठ संख्या 6

क.सं.	नाम जिला	प्रकाशित साम्रगी समझने योग्य	प्रकाशित सामग्री समझने योग्य पर राय					
			पूर्णरूपेण		आंशिक		बिलकुल नहीं	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	अजमेर	79	71	90	8	10	0	0
2.	जयपुर	72	56	78	13	18	3	4
3.	दौसा	48	25	52	23	48	0	0
4	सीकर	90	58	64	21	23	0	0
5.	झून्झनू	44	33	75	5	11	0	0
6	भरतपुर	41	33	80	8	20	0	0
7	अलवर	59	45	76	14	24	0	0
8	धौलपुर	64	55	86	9	14	0	0
9	सवाई माधोपुर	26	8	31	18	69	0	0
10	करौली	84	67	83	14	17	0	0
11	बांरा	81	66	49	15	19	0	0
12	कोटा	45	22	100	23	31	0	0
13	बून्दी	29	29	54	0	0	0	0
14	झालावाड	61	33	31	23	38	5	8
15	टौंक	32	10	0	22	69	0	0
16	भीलवाडा	45	22	80	23	51	0	0
17	चित्तौडगढ	83	66	38	14	17	3	4
18	कांकरोली	97	37	0	58	60	2	2
19	उदयपुर	27	6	77	19	70	2	8
20	बांसवाडा	62	48	59	14	23	0	0
21	डूंगरपुर	91	54	0	32	36	5	5
22	पाली	72	63	67	9	13	0	0
23	नागौर	54	36	64	12	22	6	11
24	जालौर	56	36	60	4	7	16	29
25	सिरोही	76	45	0	11	14	20	26
26	श्रीगंगानगर	59	48	81	11	19	0	0
27	राज्य स्तर	1560	1072	69	426	27	62	4

क्र. सं.	जिला	प्रकाशन पढने वालों की संख्या	नवीन जानकारी प्राप्त करने वाले		प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथमबार उपयोग करने वाले कृषक		प्रथमतया सिफारिश के अपनाने से लाभान्वित कृषक		
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	अधिक	कम	बिलकुल नहीं
1.	अजमेर	79	57	72	20	25	11	6	3
2.	जयपुर	72	46	64	22	31	14	8	0
3.	दौसा	48	30	63	12	25	11	0	1
4.	सीकर	79	70	89	50	63	42	6	2
5.	झून्झनू	38	38	100	9	24	9	0	0
6.	भरतपुर	41	41	100	28	68	25	0	3
7.	अलवर	59	56	95	29	49	22	3	4
8.	धोलपुर	64	64	100	60	94	17	43	0
9	सवाई माधोपुर	26	21	81	2	8	2	0	0
10.	करौली	84	83	99	27	32	5	20	2
11.	बांरा	81	68	84	31	38	10	21	0
12.	कोटा	45	45	100	20	44	12	8	0
13.	बून्दी	29	26	90	15	52	5	10	0
14.	झालावाड	61	48	79	37	61	19	17	1
15.	टोंक	32	25	78	17	53	2	13	2
16	भीलवाडा	45	37	82	14	31	8	5	1
17.	चित्तौडगढ	83	83	100	29	35	13	8	8
18.	कांकरोली	97	78	80	79	81	52	21	6
19.	उदयपुर	27	26	96	19	70	17	1	1
20.	बांसवाडा	62	9	15	15	24	12	1	2
21.	डूंगरपुर	91	88	97	58	64	49	9	0
22.	पाली	72	51	71	28	39	28	0	0
23.	नागौर	54	53	98	29	54	26	2	1
24.	जालौर	56	51	91	50	89	50	0	0
25.	सिरोही	76	75	99	42	55	42	0	0
26	श्रीगंगानगर	59	44	75	28	47	13	15	0
27	राज्य स्तर	1560	1313	84	770	49	516	217	37

वर्ष 2005–06 के दौरान प्रचार, प्रसार हेतु जिला स्तर पर प्रकाशित पुस्तिकाओं/फोल्डरों के विशेष अध्ययन सर्वेक्षण के मुख्य निष्कर्ष

- 2600 चयनित कृषक के विरूद्व 2242 कृषकों का सर्वेक्षण किया गया । जो कुल लक्ष्य का 86.20 प्रतिशत रहा ।
- सर्वेक्षण के आधार पर 11 प्रतिशत अनू.जनजाति, 16 प्रतिशत अनू.जाति, 44 प्रतिशत पिछडी जाति, एवं 9 प्रतिशत सामान्य कृषक रहे।
- सर्वेक्षण अनुसार प्रति कृषक औसत कृषि जौत 1.27 हैक्टर पाई गई ।
- सर्वेक्षण के आधार पर 94 प्रतिशत कृषक साक्षर पाये गये ।

1– खरीफ 2005 (पैकेज आफॅ प्रैक्टिस) पुस्तिका

- राज्य में पैकेज आफॅ प्रैक्टिस की खरीफ 2005 की 16 लाख पुस्तिकाओं का वितरण करवाया गया ।
- प्रत्येक जिलें में लक्ष्य अनुसार पैकेज आफॅ प्रैक्टिस का मुद्रण कराया गया । 7 जिलों में 50000 हजार से अधिक पुस्तिकाओं का मुद्रण करवाया गया ।
- 89 प्रतिशत चयनित कृषकों को पैकेज आफॅ प्रैक्टिस की खरीफ 2005 का प्रकाशन वितरित किया गया ।
- नियमित समय पर 16 प्रतिशत कृषकों को प्रकाशन प्राप्त हुआ ।
- 82 प्रतिशत कृषकों द्वारा प्रकाशन को पढने की जानकारी प्राप्त हुई ।
- प्रकाशन पढने वाले 72 प्रतिशत कृषक के अनुसार उसमें वर्णित सामग्री समझने योग्य पाई गई ।
- जिन कृषकों को प्रकाशन प्राप्त हुआ उनमें से 87 प्रतिशत कृषकों को खेती सम्बन्धी नयी जानकारी प्राप्त हुई तथा 41 प्रतिशत कृषकों ने प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथमबार उपयोग किया ।
- जिन कृषकों द्वारा सिफारिश प्रथमबार उपयोग किया गया उनमें से 95 प्रतिशत को उत्पादकता में लाभ हुआ ।
- प्रकाशित पैकेज आफॅ पैक्टिस से प्रभावित होकर कृषकों द्वारा प्रमाणित बीज 9 प्रतिशत, बीज उपचार 10 प्रतिशत, जीवाणु खाद का उपयोग 3 प्रतिशत, अपने खेत पर प्रथमबार उपयोग किया गया ।

2 रबी 2005–06 (पैकेज आफॅ प्रैक्टिस) पुस्तिका

- राज्य में पैकेज आफॅ प्रैक्टिस की रबी 2005–06 में 15.38 लाख पुस्तिकाओं का वितरण करवाया गया ।
- 86 प्रतिशत चयनित कृषकों को पैकेज आफॅ प्रैक्टिस की रबी 2005–06 का प्रकाशन वितरण किया गया ।
- नियमित समय पर 9 प्रतिशत कृषकों को प्रकाशन प्राप्त हुआ ।
- 81 प्रतिशत कृषकों द्वारा प्रकाशन को पढने की जानकारी प्राप्त हुई ।
- प्रकाशन पढने वाले 69 प्रतिशत कृषक के अनुसार उसमें वर्णित सामग्री समझने योग्य पाई गई ।
- जिन कृषकों को प्रकाशन प्राप्त हुआ उनमें से 84 प्रतिशत कृषकों को खेती सम्बन्धी नयी जानकारी प्राप्त हुई तथा 49 प्रतिशत कृषकों ने प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथमबार उपयोग किया ।
- जिन कृषकों द्वारा सिफारिश प्रथमबार उपयोग किया गया उनमें से 95 प्रतिशत को उत्पादकता में लाभ हुआ ।
- प्रकाशित पैकेज आफॅ पेंक्टिस से प्रभावित होकर कृषकों द्वारा प्रमाणित बीज 14 प्रतिशत, बीज उपचार 11 प्रतिशत, जीवाणु खाद का उपयोग 5 प्रतिशत, एवं पौध संरक्षण 5 प्रतिशत का अपने खेत पर प्रथमबार उपयोग किया गया ।

3 सरसों उत्पादकता 150 प्रतिशत आपरेशन रबी 2005–06 फोल्डर :–

- वर्ष 2005–06 में उत्पादकता 150 प्रतिशत सरसों का अभियान नागोर एवं श्रीगंगानगर जिलों में क्रियान्वित किया गया । इसमें 50000 फोल्डर इन जिलों में प्रकाशित कर वितरण कराये गये ।
- सरसों उत्पादकता 150 प्रतिशत आपरेशन रबी 2005–06 के फोल्डर 61 प्रतिशत कृषक को प्राप्त होना पाया गया ।
- नागौर में फोल्डर का वितरण अक्टूबर, 2005 में कर दिया गया, लेकिन श्रीगंगानगर में वितरण अक्टूबर, 05 में 42 प्रतिशत, किया गया ।
- फोल्डर प्राप्त करने वाले 97 प्रतिशत व्यक्तियों द्वारा फोल्डर को पढा गया ।

- फोन्डर में प्रकाशित सामग्री पढने वाले शत प्रतिशत कृषक के अनुसार उसमें वर्णित सामग्री समझने योग्य थी ।
- प्रकाशन पढने से 53 प्रतिशत व्यक्तियों को नवीन जानकारी प्राप्त हुई तथा 32 प्रतिशत कृषकों ने प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथमबार उपयोग किया ।
- प्रकाशित फोल्डर के आधार पर कृषकों के द्वारा भूमि उपचार 15 प्रतिशत, जीवाणु खाद का 8 प्रतिशत, प्रथमबार उपयोग किया गया ।
- अभियान के फलस्वरूप वर्ष 2005–06 में नागोर एवं श्रीगंगानगर जिलों में सरसों फसल की औसत उत्पादकता में गत वर्ष की तुलना में क्रमशः 32 एव 22 प्रतिशत वृद्वि रही ।

4 टारगेट 20 + सरसों 'उत्पादकता अभियान 'फोल्डर ''

- वर्ष 2005–06 में टारगेट 20 + सरसों का अभियान भरतपुर, चित्तौडगढ एवं पाली जिलों में कियान्वयन किया गया । इसके अन्तर्गत भरतपुर में 2,81,000 चित्तौडगढ में 50000 एवं पाली में 25000 फोल्डर का प्रकाशन कर कृषकों को वितरित किया गया ।
- फोल्डर 51 प्रतिशत कृषक को नियमित समय पर प्राप्त हुआ ।
- प्रकाशित फोल्डर को 96 प्रतिशत, कृषकों द्वारा को पढा गया।
- प्रकाशित फोल्डर 99 प्रतिशत व्यक्तियों के अनुसार उसमें वर्णित सामग्री समझने योग्य थी ।
- प्रकाशित फोल्डर पढने से 89 प्रतिशत व्यक्तियों को नवीन जानकारी प्राप्त हुई तथा 30 प्रतिशत कृषकों ने प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथम बार उपयोग किया गया ।
- प्रकाशित फोल्डर पुस्तिका के कारण प्रथमबार सिफारिश का उपयोग करने वाले 87 प्रतिशत कृषकों को लाभ प्राप्त हुआ।
- प्रकाशित पुस्तिका से प्रभावित होकर कृषकों द्वारा मुख्य रूप से सरसों फसल में जिप्सम का उपयोग 10 प्रतिशत, प्रमाणित बीज 9 प्रतिशत, बीज उपचार 9 प्रतिशत का उपयोग प्रथमबार किया गया ।
- अभियान के फलस्वरूप वर्ष 2005–06 में भरतपुर एवं चित्तौडगढ जिलों में सरसों फसल की औसत उत्पादकता गत वर्ष की तुलना में क्रमशः 2 एवं 19 प्रतिशत वृद्वि पाई गई ।

5 आपरेशन 150 प्रतिशत उत्पादकता वृद्वि अभियान जौ :–

- वर्ष 2005–06 में आपरेशन 150 प्रतिशत जौ का अभियान जयपुर एवं सीकर जिलों में क्रियान्वयन किया गया । इसके अन्तर्गत जयपुर जिलें में 20000 एवं सीकर जिलें में 25000 फोल्डरों का प्रकाशन कर कृषकों को वितरित किये गये ।
- प्रकाशित फोल्डर 74 प्रतिशत को प्राप्त हुआ । जयपुर में इसका वितरण नवम्बर, 06 में कर दिया गया, लेकिन सीकर जिलें में नवम्बर तक 64 प्रतिशत रहा ।
- प्रकाशित फोल्डर प्राप्त करने वाले 76 प्रतिशत कृषकों द्वारा प्रकाशित फोल्डर को पढा गया।
- प्रकाशित फोल्डर प्रकाशन पढने वाले 91 प्रतिशत कृषकों के अनुसार उसमें वर्णित सामग्री समझने योगय थी ।
- प्रकाशित फोल्डर प्रकाशन पढने से 45 प्रतिशत कृषकों को नवीन जानकारी प्राप्त हुई तथा 22 प्रतिशत कृषकों ने प्रकाशित सामग्री अनुसार सिफारिश का प्रथमबार उपयोग किया ।
- प्रकाशित पुस्तिका के कारण प्रथमबार सिफारिश का उपयोग करने वाले 97 प्रतिशत कृषकों के अनुसार उनको लाभ प्राप्त हुआ।
- प्रकाशित फोल्डर से प्रभावित होकर कृषकों द्वारा जौ फसल में मुख्य रूप से प्रमाणित बीज 8 प्रतिशत, जीवाणु खाद 7 प्रतिशत, बीज उपचार 7 प्रतिशत एवं भूमि उपचार 5 प्रतिशत का प्रथमबार उपयोग किया।
- अभियान के फलस्वरूप वर्ष 2005–06 में जयपुर जिले में जौ फसल की औसत उत्पादकता में गत वर्ष की तुलना में 24 प्रतिशत वृद्वि हुई ।